17/11/22

B.A. Part II
Hindi Hons

डॉ० अरविन्द कुमार
हिंदी
एस० एस० कॉ०, गढ़ाबाद

पंत की काव्य कला

मर्मवेदना जगाने वाली शक्ति की पूरी प्रतिष्ठा हुई है। "लघु प्रतिदिन
चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर" जैसी पंक्तियों में प्रकृति के भयावह रूप
का चित्रण हुआ है। "नौका विहार" का वर्णन अप्रस्तुत आरोपों से
अधिक आच्छादित है फिर भी यह प्रकृति के प्रत्यक्ष रूपों की ओर
कवि का खिंचाव सूचित करता है। कवि ने बहुत ही व्यंजक और
रमणीय साम्य जगह-जगह सामने लाया है। सर्वाधिक स्थलों पर पंत
जी की काव्य शैली संगत, संयत और गम्भीर है। पंतजी मूलतः
सौन्दर्यवादी कवि हैं। प्रतीकमयी भाषा का बड़ा सफल प्रयोग पंतजी
के काव्य में हुआ है। पंतजी ने माधुर्य के लिए उषा, जीवन और
जगत के ~~खच्छक~~ रूपान्तरिक परिवर्तन के लिए फूल, दुःख-
सुख के लिए सांझ-ऊषा, बाल्यकाल के लिए कली, दीप्ति कांति
आदि के स्वर्ण और रूप या चपलता के लिए रजत जैसे प्रतीकों
का प्रयोग किया है।

पंत जी सुकुमार भावनाओं के कवि हैं। इनके काव्य में छव
न्यार्थ व्यंजना अधिक है। आपकी शैली विद्यापति, नन्ददास, देव,
पद्माकर और मतिराम की शैली की तरह सरस है। सरस शैली के
लिए आपने माधुर्य व्यंजक शब्दों और कोमल कान्त पदावली का भरपूर
प्रयोग किया है। कुन्तक की भाषा में आप सुकुमार मार्ग के कवि हैं।
आपका वर्ण-विन्यास रसानुकूल है। शास्त्रीय भाषा में आपने
वैदर्भी रीति, माधुर्य गुण और उपनागरी वृत्ति से अपनी शैली को
आप्लावित कर रखा है।

तात्पर्य यह कि कलापक्ष के चारो आयामों - अभिव्यंजना
शिल्प, रूप और शैली की गहराई जवानी पंत जी की कला में
देखने को मिलती है।